माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों में व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन

* डॉ. ममता बाकलीवाल

किसी भी देश की जनता के जीवन स्तर को समुन्नत बनाने के प्रयासों की सफलता दूसरे अन्य कारकों के साथ–साथ काफी सीमा तक वहाँ की जनशक्ति के गुणों, योग्यताओं, क्षमताओं एवं अन्य विशेषताओं पर आधारित होती है और ये गुण वस्तुतः उस देश में प्रचलित शिक्षा व्यवस्था के स्तर से प्रभावित होते हैं। यह निर्विवाद सत्य है कि किसी भी देश का भविष्य उसकी शिक्षा पर निर्भर करता है इसलिए भारतवर्ष के भविष्य की रूपरेखा भी शिक्षा पर निर्भर करती है। शिक्षा की विशिष्ट भूमिका देश के चहुँमुखी विकास, विशेषकर आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी और औद्योगिक विकास की गति में निरन्तर अभिवृद्धि करती आ रही है। एक के बाद एक लागू की जाने वाली सभी राष्ट्रीय योजनाओं में शिक्षा की विशिष्ट भूमिका को पर्याय रूप में मान्यता दी गई है। शिक्षा का स्तर असंदिग्ध रूप से सभी घटकों से ऊपर शिक्षक के गुणों एवं क्षमताओं पर आधारित हुआ करता है।

शिक्षक वह शक्ति पुंज है जो शिक्षा का स्तर ऊँचा उठाने में, उसे उत्कृष्ट बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यही कारण है कि राष्ट्र के विकास में शिक्षक धुरी का कार्य करता है। शिक्षक में विद्वता और ज्ञान के विकास के उत्कर्ष की क्षमता होती है किन्तु यदि अध्यापक के अन्दर वांछित, आवश्यक बौद्धिक एवं व्यावसायिक योग्यता व क्षमता होते हुए भी यदि वह अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं है तो किसी भी प्रकार की कोई भी उपलब्धि की प्राप्ति नहीं हो सकती। शिक्षण संस्था की सफलता अध्यापकों के गुणों पर निर्भर हुआ करती है। वास्तव में अध्यापक ही संस्था द्वारा प्रदत्त शैक्षिक वातावरण के निर्माण में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है किंतु वर्तमान परिवेश में शिक्षकों को काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। व्यवहारिक रूप से देश की शैक्षिक समस्याओं की जॉच करने वाले प्रत्येक शिक्षा आयोग ने अध्यापकों की दशा की ओर विशिष्ट ध्यान दिया है। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने भी कहा है ''बहरहाल हम इस बात से पूरी तरह सहमत हैं कि आमूल–चूल शैक्षिक पुनर्गठन में अध्यापक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटक है''। शिक्षा आयोग (1964–66) के अनुसार 'शिक्षा की विशिष्टता तथा गुण को प्रभावित करने वाले एवं राष्ट्रीय विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले सभी विभिन्न घटकों में निःसन्देह रूप से शिक्षकों की योग्यता, उसके गुण सर्वाधिक प्रभावकारी है।

शिक्षक वह धुरी है, जिस पर शिक्षा का गुणात्मक विकास निर्भर है। शिक्षक ही वह ज्ञान रूपी दीपक है जो अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। इस प्रकार शिक्षक की भूमिका; व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के जीवन में महत्त्वपूर्ण होती है। इसके बावजूद यह बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि शिक्षकों को अपेक्षित महत्त्वपूर्ण दायित्व को वहन कर पाने में किन–किन कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है और क्यों वे इसे निभा नहीं पाते तथा क्या वे शिक्षण व्यवसाय से संतुष्ट नहीं हैं? जब तक शिक्षण व्यवसाय से संतुष्ट नहीं है तब तक वे एच्छिक व्यवहारों, जीवन मूल्यों, कार्य करने की आदतों एवं अपने शिष्यों के साथ आत्मीय संबंध विकसित करने में सफल नहीं हो सकते हैं। वे अध्यापक जो अपने व्यवसाय से संतुष्ट हैं, वे ही अध्यापक अपने अध्यापन कला में स्वयं को स्थापित करने एवं दक्ष प्रमाणित कर सकने में समर्थ होते है।

शिक्षा और मानव मूल्य में पारस्परिक घनिष्ट संबंध है समाज अध्यापकों से यह अपेक्षा करता है कि अध्यापक स्वयं इन मानव मूल्यों से संपन्न हो तथा अपनी शिक्षा व स्वयं के आचरण द्वारा इन मानव मूल्यों को छात्रों में अधिरोपित करें ताकि छात्र भविष्य में देश के अच्छे सच्चरित्र नागरिक बन सके।

किसी भी शिक्षक की शैक्षिक तथा व्यावसायिक योग्यता कितनी भी उच्च क्यों न हो किन्तु जब तक वह अपने व्यवसाय से भली भांति संतुष्ट न हो और उसमें उच्च मानव मूल्य निहित न हो, तब तक वह ना तो उपयुक्त अभिवृत्ति, मूल्य, कार्य के प्रति लगन तथा पर्याप्त समायोजन अपने छात्रों में नहीं उद्भूत कर सकेगा और न ही शिक्षा के स्तर को समुन्नत बनाकर राष्ट्रोन्नति में ही अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकेगा। अतः जो अध्यापक सन्तुष्ट तथा उच्च मूल्य संपन्न है वही एक उत्तम अध्यापक हो सकता है।

शिक्षकों की व्यावसायिक असन्तुष्टि तथा उनमें मूल्यों के ह्रास के कारणों को दूर किए बिना उनकी दशा में किसी भी प्रकार का सुधार संभव नहीं है। सुधार संबंधी योजनाओं का क्रियान्वयन बिना शिक्षकों के सहयोग से कदापि नहीं हो सकता है। साथ ही शिक्षकों का सहयोग प्राप्त करने हेतु उनमें व्याप्त असन्तुष्टि एवं मूल्य ह्रास के कारणों को दूर किए बिना शिक्षक सहयोग देने में समर्थ नहीं हो पाता है। कहा जाता हैः–

"A frustrated teacher is a positive danger to society because he contaminatesa the children under his care."

अर्थात एक कुंठित शिक्षक समाज के लिए खतरनाक सिद्ध होता है, क्योंकि वह अपने में कुंठा रूपी विष को बच्चो तक पहुँचा देता है। इसीलिए राष्ट्रीय, सामाजिक, प्रगति के लिए जीवन मूल्यों पर ध्यान देना अनिवार्य हो जाता है। एक कर्मठ, सचेष्ट, सन्तुष्ट और विभिन्न जीवन मूल्यों से परिपूर्ण शिक्षक राष्ट्र के विकास में अपना अद्भुत योगदान कर सकता है। इसी

* रीडर, शिक्षा संकाय, एम.एड. राजीव गाँधी महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

हेतु यह अनुसंधान कार्य किया गया है। यह अनुसंधान इस परिपेक्ष्य में और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है क्योंकि अभी तक हाल में प्रदेश के माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की दशा को सुधारने के लिए पर्याप्त वेतन वृद्धि, पेन्शन, समयबद्ध उच्चग्रेड देने आदि से संबंधित अनेक कदम उठाये गए है। इन कदमों के उठाए जाने से उनको कहां तक व्यावसायिक संतुष्टि प्राप्त हो सकी और किस सीमा तक उनमें मूल्यों का सृजन हुआ है। इस तथ्य की जानकारी इस अनुसंधान के माध्यम से करने की कोशिश की गई है।

अतः वर्तमान समय में शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट हैं कि नहीं, व्यक्तिगत मूल्यों को कितना बनाकर रखा है, अनुसंधान के माध्यम से ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

उद्देश्य :–

1′. माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि का मापन करना।
2. माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
3. माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं में निहित व्यक्तिगत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि एवं व्यक्तिगत मूल्यों में संबंधों का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं :–

उपर्युक्त उद्देश्यों का समाधान करने के लिए निम्नांकित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है –

माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर है।

माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक अंतर है।

अधिक संतुष्ट एवं कम संतुष्ट माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक अंतर है।

सीमाऐं :–प्रस्तुत अनुसंधान बिजनौर जिले के शासकीय सहायता प्राप्त इन्टरमीडिएट विद्यालयों को Systematic Random Sampling Technique द्वारा चयनित 10 माध्यमिक विद्यालयों के 192 अध्यापकों को ही अध्ययन के क्षेत्र तक सीमित रखा है।

अनुसंधान विधि :–अनुसंधानात्मक प्रदत्तों को एकत्रित करने के लिए सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है।

न्यादर्श :–शोधकर्ता ने बिजनौर जिले के 10 शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के 192 अध्यापकों व अध्यापिकाओं को अपने अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन के उपकरण :–

(क) अध्यापक कृत्य मापनी TJSS

(ख) व्यक्तिगत मूल्य परीक्षण PVT

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण

परिकल्पनाओं और प्रदत्तों की विश्वसनीयता को जानने के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

1.परिकल्पना–एक–माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर है। (देखें तालिका–1)

उपर्युक्त सारणी क्र. 1 से स्पष्ट होता है कि अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना में प्राप्त 'टी' का मान 2.82 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक हे यह सार्थक 'टी' मूल्य बताता है कि अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि में अंतर सार्थक है अतः शोधा परिकल्पना को स्वीकृत किया गया है और निराकरणीय परिकल्पना को अस्वीकृत कर दिया गया है। मध्यमानों के अंतर को देखते हुए कहा जा सकता है कि अध्यापक की तुलना में अध्यापिकाएं अधिक संतुष्ट पाई गई हैं। जिसे चित्र क्र. 1 में दर्शाया गया है।

2.परिकल्पना–दो : माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के व्यक्तिगत मूल्यों में अंतर सार्थक नहीं है।(देखें तालिका–2)

उपर्युक्त सारणी क्र. 2 से स्पष्ट होता है कि अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के व्यक्तिगत मूल्यों की तुलना में प्राप्त 'टी' का मान 0.152 है जो कि 0.01 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है यह 'निरर्थक 'टी' मूल्य बताता है अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है। इसलिए शोध परिकल्पना को अस्वीकृत कर दिया गया है तथा निराकरणीय परिकल्पना को स्वीकार कर लिया गया है। दोनों समूहों के मध्यमानों में भी अंतर नगण्य है जिसे चित्र क्र. 2 में प्रदर्शित किया है। जिसके देखने से इस परिणाम कीपुष्टि होती है।

तीसरी परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए अध्यापकों को दो समूहों (अधिक व कम सन्तुष्ट) में "केली विधि" द्वारा विभाजित किया गया है।

3. परिकल्पना तीन : अधिक संतुष्ट एवं कम संतुष्ट माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के व्यक्तिगत मूल्यों में अंतर सार्थक है। (देखें तालिका–3)

उपर्युक्त सारणी क्र. 3 से स्पष्ट होता है कि अधिक संतुष्ट व कम संतुष्ट अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों की तुलना में प्राप्त 'टी' का मान 3.33 है जो कि 0.01 सार्थकता स्त्र पर सार्थक है। यह सार्थक 'टी' मूल्य बताता है कि अधिक संतुष्ट व कम संतुष्ट अध्यापकों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर है। अतः शोध परिकल्पना को स्वीकृत किया गया है और निराकरणीय परिकल्पना को अस्वीकृत कर दिया गया है।

इसके विपरीत अन्य मूल्यों (सामाजिक, सौन्दर्यात्मक, शैक्षिक, घरेलु, आर्थिक, जनतांत्रिक, शारीरिक मूल्य) की तुलना में प्राप्त 'टी' का मान क्रमशः 0.18, 0.52, 0.21, 0.104, 0.89, 0.41, 0.16 है जो कि सार्थकता के 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए निराकरणीय परिकल्पना को स्वीकार कर लिया गया है तथा शोध परिकल्पना को अस्वीकृत कर दिया गया है यह परिणाम यह दर्शाता है कि अधिक संतुष्ट कम संतुष्ट अध्यापकों के व्यक्तिगत मूल्यों (धार्मिक मूल्यों को छोड़कर) सार्थक अंतर नहीं है।

दोनों समूहों के मध्यमानों को देखने से पता चलता है कि धार्मिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, घरेलू मूल्य तथा आर्थिक